P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गुप्तकालीन मूर्ति निर्माण कला में बौद्ध धर्म एवं दर्शन : मथुरा कला केन्द्र के सन्दर्भ में

योगेन्द्र प्रसाद
शोधार्थी,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डॉ0 बी0आर0ए0विश्वविद्यालय,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सुगम आनन्द
प्रोफेसर,
इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
डॉ0 बी0आर0ए0विश्वविद्यालय,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

गुप्तकाल में मूर्ति निर्माण कला का अद्भुत विकास हुआ। वैष्णव, शैव, जैन तथा बौद्ध धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों के मथुरा, सारनाथ, पाटिलीपुत्र, गया, कसिया इत्यादि केन्द्रों पर उत्कृष्ट नमूने बनाये गय गुप्त काल में कला का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप स्पष्ट दिखाई देता है। गुप्त शासक वैष्णव धर्मावलम्बी थे। लेकिन उन्होंने कला के विकास के लिए सभी–धर्मों के अनुयायियों को प्रश्रय दिया। इस क्रम में बौद्ध धर्म से जुड़ी बेजोड़ मूर्तियों का भी निर्माण किया गया। गुप्तकालीन बौद्ध धर्म की मूर्तियों में विविध विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। जैसे रूप और भाव का सम्मिलन, कला में देवत्व की भावना, निर्मल सौन्दर्य, विदेशी कला का प्रभाव समाप्त, वस्त्रों का अद्भुत प्रदर्शन तथा बैठी तथा खड़ी मूर्तियाँ। मथुरा तथा सारनाथ मूर्तिकला केन्द्रों पर विशेष रूप से उत्कृष्ट बौद्ध मूर्तियों का निर्माण किया गया।

मथुरा में खुदाई में प्राप्त बुद्ध की खड़ी मूर्ति जो अब मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित इस कला का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। मथुरा के आसपास प्राप्त लाल चित्तीदार पत्थर का उपयोग मूर्ति निर्माण में किया गया।

मुख्य शब्द : धर्मचक्र प्रवर्तन, अभय तथा वरद मुद्रा, संघाटि, कुंचित केश, लावण्य, प्रभामण्डल, करूणा, आध्यात्मिकता ।

प्रस्तावना

गुप्त काल में बौद्ध धर्म एवं दर्शन का मूर्ति निर्माण कला पर भी प्रभाव पड़ा। 4–6 शती के मध्य लगभग 200 वर्षों तक चले इस गुप्त युग में, बौद्ध मूर्तियों के निर्माण का एक नवीन युग प्रारम्भ हुआ।[1] बौद्ध मूर्ति कला अपनी उच्चतम सीमा, कुशलता तथा कलात्मक ज्ञान की सर्वोत्कृष्ट कल्पना एवं उदाहरण प्रस्तुत करने में सफल रही। इसीलिए भारतीय कला के इतिहास में गुप्त काल की बौद्ध मूर्तियों को भी अद्वितीय स्थान दिया गया है। इस युग की कलात्मक अभिरूचि का समादर एवं स्वागत कालान्तर में भी हुआ।[2]

अध्ययन का उद्देश्य

1. गुप्तकाल में मथुरा में बौद्ध धर्म से जुड़ी मूर्ति निर्माण कला का अध्ययन करना।
2. मथुरा में निर्मित गुप्तकालीन बौद्ध धर्म की मूर्तियों की विविध विशेषताओं का अध्ययन करना।
3. गुप्तकालीन मथुरा केन्द्र में बनी बौद्ध धर्म की मूर्तियों में विविध विषयों तथा अलंकरणों के सन्दर्भों का अध्ययन करना।

साहित्यावलोकन

शोधार्थी ने कला, धर्म तथा विशेष रूप से मूर्ति निर्माण विज्ञान से जुड़े उपलब्ध ग्रन्थों एवं पुस्तकों का गहन अध्ययन किया है। निम्नलिखित पुस्तकों से सम्बन्धित साहित्य को समझने में विशेष सुविधा मिली है।

1. वासुदेव उपाध्याय, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान : चौखम्भा प्रकाशन विद्याभवन, 1982 वाराणासी। इस पुस्तक में विस्तार से प्राचीन काल में सैन्धव सभ्यता से लेकर वृहत्तर भारत तक भागवत शैव, बौद्ध, तथा जैन धर्म की मूर्तियों के इतिहास का वर्णन किया गया है। लेखक ने पुस्तक को तीन भागों में विभक्त किया है। भारत में कला का उद्गम तथा कला केन्द्रों का विकास ब्राहमण धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाओं का विवरण तथा मूर्ति कला की प्रगति, हिन्दू मूर्तियों के अतिरिक्त बौद्ध तथा जैन मत से सम्बद्ध कलाकृतियों का वर्णन सम्मिलित किया गया है। इस पुस्तक में मूर्तिकला की वैज्ञानिक पद्धति तथा विकास से समाज को परिचित कराना है। विभिन्न सन्दर्भो का प्रयोग इस पुस्तक में कम किया गया है। जिस कारण मौलिकता का प्रश्न उठ खड़ा होता है।
2. वासुदेवशरण अग्रवाल, भारतीय कला : 1966, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। इस पुस्तक में भारतीय कला के विकास तथा भारतीय कला के विविध रूपों जैसे स्थापत्य, मूर्ति, मन्दिर निर्माण कला, का वर्णन है। भारत में कला के विकास का विशद वर्णन इस ग्रन्थ की विशेषता है। मूर्तिकला पर तकनीक की दृष्टि से पुस्तक में सामग्री का अभाव है।
3. प्रभु दयाल मीतल, ब्रज में कलाओं का इतिहास, 1975, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी। इस पुस्तक में ब्रज क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा धर्म के विकास को प्रस्तुत किया

4. गया है। ब्रज के सांस्कृतिक जीवन के विकास पर विस्तृत लेखन किया गया है। पुस्तक में पर्याप्त सन्दर्भों का अभाव दिखाई पड़ता है। इस कारण पुस्तक की मौलिकता पर प्रश्न लगता है।
5. R.C. Sharma, Mathrua Museum and Art, 1975, दिल्ली– आर.सी. शर्मा मथुरा संग्रहालय में उपनिदेशक रहे तथा बाद में राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के महानिदेशक भी रहे। वह पुरातत्व विज्ञानी हैं तथा मथुरा कला विशेष रूप से बौद्ध, हिदू, तथा जैन मूर्तियों के विषय के जानकार हैं तथा मथुरा संग्राहलय में प्रस्तुतीकरण के प्रणेता रहे हैं। इस पुस्तक में सन्दर्भों के साथ–2 ऐतिहासिक पक्ष का भी प्रस्तुतीकरण किया गया है।
6. B. Bhatacharya, The Indian Budhist Icongraphy, Oxford University Press, 1934, Delhi – बौद्ध धर्म से जुडी महात्मा बुद्ध तथा अनेक बोधिसत्वों की प्रतिमाओं का कुषाण काल से लेकर गुप्तकाल तक विकास का विस्तृत परिचय इस पुस्तक में मिलता है। बौद्ध प्रतिमाओं के विषय, तकनीक तथा अलंकरण के प्रयोग पर भी जानकारी मिली है।
7. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, 1990, लखनऊ – लेखक एक मूर्धन्य इतिहासकार रहे हैं तथा बौद्ध धर्म के उद्भव तथा विकास का सन्दर्भ सहित प्रस्तुतीकरण प्रशंसनीय है। लेखक को पाली साहित्य का भी ज्ञान है। अतः लेखन में मौलिकता दिखाई देती है।
8. प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान : नीलकण्ठ पुरूषोत्तम जोशी, पटना, 1961 । इस पुस्तक में प्राचीन, भारत में मूर्ति विज्ञान के इतिहास का विस्तृत वर्णन किया गया है। सारनाथ, गन्धार के साथ–2 दक्षिण भारत में अमरावती मूर्तिकला के विकास का विस्तृत प्रस्तुतीकरण किया गया है।

विषय विस्तार

गुप्त काल में परवर्ती कला केन्द्र मथुरा में भी बौद्ध मूर्तियों का निर्माण कार्य जारी रहा। इस केन्द्र पर निर्मित बौद्ध प्रतिमाओं में निम्नलिखित विशेषताएं देखी जा सकती हैं:–

1. रूप और भाव का सम्मिलन : बौद्ध मूर्तियों में स्थूल जगत की रूपकृति तो है परन्तु मुख पर झलकते भावों से स्पष्ट होता है कि कलाकार में सांसारिक भावों से उठकर आध्यात्मिकता से साक्षात्कार करने की लगन भी। वाह्य सौन्दर्य और आत्मिय भावों में अनूठा संगम देखने को मिलता है। शरीर सौष्ठव में कोमलता है।[3]
2. कला में देवत्व की भावना : मूर्तियों के मुखों पर कला के रूप के साथ–साथ देवी भावना देखने को मिलती है।
3. निर्मल सौन्दर्य : बौद्ध मूर्तियों में न कुषाणकालीन मांसलता है और न ही अमरावती शिल्प की स्वेच्छाचारिता[4] मथुरा मूर्ति की कोमलता और अमरावती के सौन्दर्य का अभिनव सम्मिलन मूर्तियों में साकार हुआ।[5] अन्ततः बाह्य सौन्दर्य और आत्मिक भावों में अनूठा संगम दिखाई देता है।
4. वस्त्रों में प्रदर्शन में परिवर्तन देखने को मिलता है। कुषाण कालीन कला के भारी–भरकम वस्त्राभूषणों के स्थान पर हल्के और कम आभूषण तथा पारदर्शी वस्त्रों का उपयोग किया गया है।[6]
5. विदेशी प्रभाव की समाप्ति कर दी गई।
6. धनुषाकार नेत्रों को दर्शाया गया है। नेत्र आकार में बड़े हैं तथा कमल की पंखुड़िया जैसे अधखुले हुए हैं। जिनसे ध्यान में मग्न होने का आभास मिलता है।
7. ग्रीवा पर लाइनें दिखाई गई हैं जो कमबुग्रीवा सदृश्य लगती है।
8. पद्यदलों, मालाओ, मनकों आदि विभिन्न अलंकरणों से युक्त प्रभा मंडल है।
9. कुंचित केश।
10. दोनों कंधों पर संघाटि वस्त्र दिखाया गया है जो कुषाण काल की मूर्तियों में बांयें कंधे पर ही दिखाया गया है।
11. हाथों की विभिन्न मुद्राएं दिखाई देती है। बैठी प्रतिमा का हाथ धर्म चक्रप्रवर्तन, व्याख्यान या भूमिस्पर्श मुद्रा में दिखाई पड़ता है। खड़ी मूर्तियों में अभय तथा वरद् मुद्रा की अभिव्यक्ति मिलती है।[7]
12. पशु तथा वानस्पतिक चित्रण को कोई प्राथमिकता नहीं दी गई है। कुषाण काल में चौकी के नीचे सिंह को दिखाया गया है।
13. मूर्ति स्थापन में अंकित अभिलेख में उसका उद्देश्य अनुत्तरज नानावाण्ती (अर्थात्सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति करना है) कुषाण कालीन मूर्तियों में स्थापन का उद्देश्य मूर्ति अभिलेखों के अनुसार नैतिकता से आध्यात्म की ओर प्रयाण करना है।[8]
14. इस काल की बौद्ध मूर्तियाँ सीधी परन्तु शिथिलता लिए हुए हैं। बुद्ध की खड़ी मूर्तियों में बायाँ पैर एक प्रकार से चलायमान होने का आभास देता है।

इससे प्रतीत होता है कि गुप्त कालीन समाज का ध्येय उच्च आदर्शों की प्राप्ति के लिए सतत् प्रयास तथा पुण्य कर्म करना था।

मथुरा में गुप्त कालीन बौद्ध धर्म की मूर्तियों का विवरण :

1. इस काल में निर्मित 7.5 फीट ऊँची एक खड़ी बुद्ध मूर्ति मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित है। (ए, 5, आकृति 159) मूर्ति कला का गुप्त कालीन यह सर्वोत्कृष्ट नमूना है। मूर्ति में महात्मा बुद्ध की स्वाभाविक स्मित एवं प्रशांत मुख–मुद्रा, कुचित केश, अलंकृत गोल प्रभामंडल और चुन्नटदार झीने वस्त्र के अन्दर से झाँकते हुए शारीरिक सौन्दर्य का अंकन किया गया है।[9] कमल के समान अधखुले नेत्र, लम्बे काल तथा बुद्धत्व की ज्ञानाग्नि में समस्त विकारों में भस्मीभूत होने पर दिव्यालोक से मुख मंगल आच्छादित हो उठा है।[10] इस मूर्ति के अभिलेख से ज्ञात होता है कि गुप्त कालीन भिक्षु यश दिन्न से मथुरा मंडल के किसी बौद्ध उपासनालय में प्रतिष्ठित करने के लिए इसे निर्मित कराया था। वह अभिलेख इस प्रकार है[11]:–

   दय धर्मो यं शाक्य भिक्षो यश दिनस्य यदत्रपुण्य तद् भवतुमा
   ता पित्रो ..... आचार्योपाध्या (ध्या) यानां च सर्व सत्व (त्वा) नुतर ज्ञानावाप्तये।
2. राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के अधीन राष्ट्रपति भवन में प्रदर्शित इस कला केन्द्र का एक और बेजोड़ नमूना प्रदर्शित है। (आकृति 141) इस मूर्ति की नाक सुरक्षित है। इस मूर्ति में प्रभामंडल की बनावट में थोड़ा अन्तर दिखाई देता है। इस मूर्ति में कोई अभिलेख उत्कीर्ण नहीं है।
3. इस काल की एक अन्य मूर्ति इंडियन म्यूजिएम, कलकत्ता में प्रदर्शित है। (आकृति 141) इस मूर्ति में प्रभामंडल नहीं है।
4. गुप्त युग की बौद्ध मूर्ति कला का एक बेजोड़ उदाहरण गोविन्द नगर, मथुरा से प्राप्त तथा वर्तमान में मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित बुद्ध मूर्ति है। (76 : 25, आकृति 125) इस मूर्ति में भी सौम्यता तथा प्रभामंडल दृष्टिगोचर होता है। मूर्ति का दाहिना हाथ जोड़ देने से आकर्षण और बढ़ गया है। इस मूर्ति में तीन लाइन का अभिलेख भी उत्कीर्ण किया गया था। जिसका विशेष महत्व है।[12] अभिलेख इस प्रकार है :

''..... सिद्ध (T) सं. 100 (+) 10 (+) 5 श्रावण मादि 10 (+) 2 अस्यां ..... दिवस पुर्ण्वाया भगवतः दश बल बलिन शाक्य मुनेः।''

इस मूर्ति को गुप्त काल में 434–35 शती में कुमार गुप्त के शासन काल में बनाया गया था।

5. कसिया (कुशीनगर) की विशालकाय बुद्ध मूर्ति महापरिनिर्वाण स्थिति में मथुरा मूर्ति कला एक अन्य उदाहरण है। इस मूर्ति को देखने से सौम्यता और आध्यात्मिकता का भाव दिखाई पड़ता है। इस मूर्ति का सिर बहुत बड़ा है तथा विभिन्न कोणों से देखने पर ही इसकी कलात्मकता की परख की जा सकती है। इस मूर्ति के अभिलेख से पता चलता है कि इसका निर्माण मथुरा के शिल्पी दिन्ना द्वारा कराया गया था।[13]
6. गुप्तकाल की बुद्ध मूर्ति का एक उदाहरण गोविन्दनगर मथुरा से प्राप्त तथा वर्तमान में मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित मूर्ति है। (76.27, आकृति 144) इस मूर्ति के सिर को जोड़ा गया है तथा दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है। मूर्ति के नीचे की ओर स्त्री–पुरुष उपासकों की मूर्तियाँ है। मूर्ति में केश घुंघराले हैं।[14]
7. मथुरा संग्रहालय (76.246 आकृति 146) में प्रदर्शित बुद्ध का सिर गुप्त कालीन मूर्ति कला की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है। घुंघराले बाल, कमल की पंखुड़ियों सदृश्य अध–मुदी आँखें तथा शान्त भाव इसकी विशेषताएं हैं। सिर का भाग क्षतिग्रस्त है।[15]
8. मथुरा संग्रहालय में (गोविन्द नगर) से प्राप्त बुद्ध की प्रतिमा का टोरसो बिना सिर की मूर्ति है। (76.28, आकृति 145) चुन्नटदार झीने वस्त्रों का प्रदर्शन विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
9. मथुरा संग्रहालय में गोविन्द नगर इलाके से प्रापत टैराकोटा द्वारा निर्मित बुद्ध की सिर की आकृति है। मिट्टी में बनाई बुद्ध की गुप्त कालीन कृति मूर्ति कला का उत्कृष्ट नमूना है।[16] प्रतीत होता है कि शिल्पी सर्वप्रथम मिट्टी की मूर्ति बनाने के बाद ही पाषाण की मूर्तियों का निर्माण करते होगें। मथुरा में मिट्टी की मूर्तियों का निर्माण काफी लम्बे समय से किया जाता रहा था। कुषाण काल में मिट्टी मूर्तियों के स्थान पर पाषाण का प्रयोग ही किया गया। गुप्त काल में पुनः पाषाण के साथ–साथ मिट्टी की मूर्तियों का भी निर्माण किया जाने लगा।
10. लखनऊ संग्रहालय में (नं. बी. 6, आकृति 150) बुद्ध का छोटा टौरसो गुप्त मूर्ति कला का अनूठा नमूना है। प्रथम, इसमें प्रभामंडल अंडाकर है। द्वितीय, दाहिना हाथ कार्ट स्थान के नीचे तक वरदमुद्रा में है। यह मथुरा कला एक नवीन लक्षण था।[17]
11. मथुरा संग्रहालय द्वारा अधिग्रत बुद्ध प्रतिमा का पैडस्टल (चौकी) का शिलालेख तिथि निर्धारण की दृष्टि से विशेष महत्व का है। (82:240 आकृति 169) इस चौकी में उत्कीर्ण अभिलेख में बुद्ध गुप्त का नाम लिखा है तथा 161 वर्ष अर्थात् 480 शती निर्माण वर्ष माना जा सकता है।[18]
12. मथुरा में चामुंडा टीले से प्राप्त तथा मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित बुद्ध के सिर की आकृति (49, 3510 : आकृति 153) मथुरा केन्द्र पर गुप्त काल के विकास का एक और उत्कृष्ट उदाहरण है। घुंघराले बाल, शान्त चित्त, आध्यात्मिक मुखाकृति, लम्बे कान, कमल के समान अंधमुदी आँखे इसकी विशेषताएँ हैं।[19]
13. बुद्ध मूर्ति का उत्कीर्ण पैडस्टल (चौकी) मथुरा संग्रहालय (76.35, 152) में प्रदर्शित है। इसमें पैरों का भाग ही दिखाई देता है। चौकी में पूजकों को भी पाषाण पर उत्कीर्ण किया गया है। इस चौकी पर एक अभिलेख संस्कृत भाषा में गद्य एवं पद्य उत्कीर्ण किया गया है। अभिलेख में राजा अथवा किसी तिथि को अंकित नहीं किया गया है। बुद्ध को आश्चर्य जनक रूप में 'जिना' के रूप में उल्लिखित किया गया है।

''.....अप्रतिमस्य प्रतिमा प्रतिम शत भाषिते जिनस्येयम् स्तूपागणे भगवतो निवेशित (भि) हिरणागेन .....''[20]

14. मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित चौकी का एक टूटा भाग (64.12) जमालपुर से प्राप्त किया गया है। यह स्थान कुषाण तथा गुप्त काल में मथुरा कला का एक महत्वपूर्ण स्थान था। यही ऐसा अभिलेख है जिसमें कुमारगुप्त के राज्य की तिथि (125+319 = 444 शती) को उत्कीर्ण किया गया है। इसके साथ–साथ अभिलेख में मथुरा स्थान को भी उत्कीर्ण किया गया है। चौकी पर दिखाये गये उपासकों की परम्परा भी गुप्त कालीन कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।[21]

निष्कर्ष

उपरोक्त उदाहरण गुप्तकालीन मूर्ति कला में बौद्ध धर्म एवं दर्शन को उत्कृष्टतम स्तर पर प्रस्तुत करते हैं। मूर्तियों में लावण्य, आध्यात्मिकता, सूक्ष्मता तथा मधुरता का समावेश है। प्रकृति में जो कुछ सत्य, शिव और सुन्दरम् है, उसकी परख करने में गुप्तकालीन मथुरा के शिल्पियों को पूरी सफलता मिली।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वासुदेव उपाध्याय, 1982, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, चौखम्बा प्रकाशन विद्या भवन, वाराणसी।*
2. *वासुदेव शरण अग्रवाल, भारतीय कला, 1966, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।*
3. *ब्रजभूषण श्रीवास्तव, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, 2010, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।*
4. *रामकृष्ण दास, भारतीय मूर्तिकला, सं0 2009, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।*
5. *इन्दुमती मिश्र, प्रतिमा विज्ञान, 1972, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।*
6. *बी0पी0 सिंह, भारतीय कला को बिहार की देन, 2014, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना।*

अंत टिप्पणी

1. *एस0के0 सरस्वती, ए सर्वे ऑफ इंडियन स्कल्पचर, पृ0 124*
2. *वासुदेव उपाध्याय, प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, पृ0 50*
3. *एस0के0 सरस्वती, पूर्वोद्धत, पृ0 124–125*
4. *वही, पृ0 121*
5. *ए0एल0 श्रीवास्तव, भारतीय कला, पृ0 15*
6. *आर0सी0 शर्मा, बुद्धिस्ट आर्ट ऑफ मथुरा, पृ0 221*
7. *वासुदेव उपाध्याय, पूर्वोद्धत, पृ0 52*
8. *आर0सी0 शर्मा, पूर्वोद्धत, पृ0 222*
9. *आर0सी0 शर्मा, पूर्वोद्धत, पृ0 222*
10. *प्रभु दयाल मीतल, ब्रज की कलाओं का इतिहास, पृ0 169*
11. *आर0सी0 शर्मा, पूर्वोद्धत, पृ0 222*
12. *जे0पी0 वोगल, मथुरा म्युजिएम कैटालॉग।*
13. *डी0एल0 नीलग्रोव दि इमेज ऑफ दि बुद्धा, आकृति–57*
14. *मथुरा संग्रहालय एक परिचय, पृ0 32–33*
15. *वही, पृ0 36*
16. *वही, पृ0 38*
17. *लखनऊ संग्रहालय, कैटालॉग लखनऊ, पृ0 6*
18. *आर0सी0 शर्मा, मथुरा म्यूजिएम एंड आर्ट, पृ0 84*
19. *वही, पृ0 87*
20. *जे0सी0 हार्टेल गुप्ता, स्कल्चर, पृ0 18*
21. *बुद्धिस्ट आर्ट ऑफ मथुरा, पूर्वोद्धत, पृ0 225*